क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वाराः योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569 243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

क्रियायोग स्वरूप को इच्छानुकूल काल तक पूर्ण ज्ञानमय, शक्तिमय और चिर युवा बनाये रखने का विज्ञान

अन्तर्जगत के निर्माण से बाह्य जगत का निर्माण संभव – स्वामी श्री योगी सत्यम्

28 फरवरी, 2013 इलाहाबाद । महाकुम्भ क्षेत्र में मुक्तिमार्ग पर सेवारत क्रियायोग सत्संग शिविर में राष्ट्र निर्माण के मूलभूत सिद्धान्तों का सूत्रपात करते हुए अन्तराष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने कहा कि मानव स्वरूप एक बहुत बड़ा राष्ट्र है । मानव स्वरूप में उच्च मानवीय मूल्यों की स्थापना तथा अन्तःकरण में सुषुप्त सम्पूर्ण दैवीय शक्तियों के प्रकाशित होने पर साधक के अंदर वह सम्पूर्ण ज्ञान प्रकाशित होने लगता है जिसके द्वारा बाह्य राष्ट्र का निर्माण संभव है । राष्ट्र निर्माण के लिए मानव का स्वयं का निर्माण आवश्यक है तथा स्वयं के निर्माण के लिए 'क्रियायोग साधना' सर्वोच्च आध्यात्मिक मार्ग है । क्रियायोग के अभ्यास से मानव के अंदर सम्पूर्ण सीमित प्रवृत्तियाँ जिन्हें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद्, मत्सर कहा गया है, का असीम आध्यात्मिक शक्ति (दैव प्रवृत्तियों) में रूपान्तरण हो जाता है । ऐसी अवस्था में साधक ज्ञान के दिव्य सूर्य के रूप में प्रकट होता है जिसकी उपस्थिति से ब्रह्माण्ड का प्रत्येक कण अपनी अलौकिक महिमा को प्राप्त करता हैं । क्रियायोग की साधना से सर्वोच्च उपलब्धि यह प्राप्त होती है कि साधक अपने स्वरूप को इच्छानुसार काल तक पूर्ण ज्ञानमय, शक्तिमय और चिर युवा रूप में बनाये रखने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है । क्रियायोग साधक बाह्य ठोस आहार के सहारे कम बल्कि सूक्ष्म आध्यात्मिक शक्ति जिसे ईश्वरीय प्रकाश, ओम शक्ति, प्राण तत्व आदि कहा गया है, को इच्छानुसार शरीर के सम्पूर्ण अंगों में प्रवाहित करके नवजीवन प्रदान करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है । उसकी इच्छाशक्ति और विचार मात्र से शरीर सूक्ष्म

आध्यात्मिक शक्ति से सम्पूर्ण उर्जा प्राप्त कर लेती है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने स्पष्ट किया कि सम्पूर्ण ऋषि मुनि जो वैज्ञानिक के रूप में प्रकट हुए ने यह सिद्ध कर दिया कि दूरी का अस्तित्व नहीं है, दूरी स्वप्न है । परमाणु में गहन एकाग्रता केन्द्रित करने पर टेलीफोन, इंटरनेट, वायरलेस, रेडियो, टेलीविजन आदि का ज्ञान प्रकट हुआ जो यह पूरी तरह सिद्ध करते हैं कि ब्रह्माण्ड की समस्त रचनाएँ हर समय हर जगह उपस्थित हैं । हम विश्व में कहीं पर भी बैठकर तत्क्षण किसी की आवाज को सुन सकते हैं, उसके चित्र को देख सकते हैं । स्वामी जी ने आगे कहा कि मानव का स्वरूप अणु परमाणुओं का संग्रह है । क्रियायोग साधना के द्वारा स्वरूप में गहन एकाग्रता केन्द्रित करके साधक स्वरूप तथा ब्रह्माण्ड की समस्त रचनाओं के बीच दूरी की शून्यता का अनुभव कर लेता है । ऐसी अवस्था में वह इच्छामात्र से कहीं भी प्रकट और अदृश्य होने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है जिसे शास्त्रों में अणिमा, गरिमा, महिमा, लघिमा, दूर श्रवण, दूर दृष्टि आदि रूपों में वर्णित किया गया है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने आगे कहा कि क्रियायोग साधना में सत्य अनुभूति में स्थित होकर साधक जो कुछ सोचता है वह सम्पूर्ण विचार अदृश्य तरंगों के रूप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में फैल जाता है जिसको सभी लोग आंशिक अथवा पूर्ण रूप में ग्रहण करते हैं । वे लोग जो साधना की गहराई में नहीं हैं, किसी आत्मज्ञानी के द्वारा सम्प्रेषित विचार को पूर्ण रूप में ग्रहण नहीं कर पाते हैं जिससे गलत और अधूरे सिद्धान्तों का प्रचार होता है । गीता वेद, शास्त्र, प्रभु ईसा की वाणी आदि का सम्पूर्ण ज्ञान आज भी परम जीवन्त रूप में अदृश्य सूक्ष्म ज्ञान प्रवाह के रूप में ब्रह्माण्ड में उपस्थित है । क्रियायोग साधना की गहनता में प्रवेश करके साधक ऋषियों-मुनियों की वाणी और उनके दिव्य संदेश के स्वरूप को बिना परिवर्तित किये उसे शुद्ध रूप में ग्रहण करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है । सम्पूर्ण वेद, शास्त्र, ज्ञान, विज्ञान की पुस्तकें चाहे जलकर राख हो जाय परन्तु सत्य अनुभूति में स्थित होने पर साधक के अन्तःकरण में सम्पूर्ण ज्ञान नित्य नवीनतम रूप में पुनः प्रकाशित हो जाता है ।

क्रियायोग शिविर में भारत, अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, फिनीलैण्ड, सिंगापुर आदि देशों से आये हुए साधक, तीर्थयात्री, कल्पवासी आदि भारी संख्या में भाग ले रहे हैं । क्रियायोग शिविर में कार्यक्रम जैसे-जैसे पूर्णाहुति की तरफ आगे बढ़ रहा है वैसे-वैसे साधना की गहनता बढ़ती जा रही है । क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा दोपहर 3:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक और रात्रि 11:00 बजे से 1:00 बजे तक हिन्दी तथा ॲंग्रजी भाषा में बड़े ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता